AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

efgyk mPp f'k{kkfFk;k dh 'kf{kd leL;k ,o 'kf{kd vkdk{kk dk vè;;u

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- eèkq —".kkuh]
प्राचार्य,
ओमकार कालेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
पत्रकार कालोनी, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

'kks/k lkj

0;kolkf;d f'k{kd viu Kku d çdk'k ls f'k{kkfFk;k dk çdkf'kr djrk g ,o mUg mlds y{;k ,o mís';k dh vkj vxzlj djrk g rFkk mUg vfHkçfjr dj lekt e ,d ;kX; ukxfjd cuku e enn djrk gA mPp f'k{kk d vrxr o f'k{kkFkÊ vkr g tk d{kk 12 oh ikl dju d ckn Lukrd e ço'k ysrk gA e[;r% egkfo|ky; ,o foÜofo|ky; e f'k{kk xg.k dj Lukrd ;k ijkLukrd dh fMxzh çkIr djrk gA

eq[; 'kCn

f'k{kd] efgyk] f'k{kkA

çLrkouk

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे जन्म के कुछ दिन के बाद से ही अपने माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों से सुनना–बोलना सीखने लगते है। मानवी जीवन में शिक्षा का स्थान ऊँचा ही होता है। इसी प्रकार समाज की प्रगति में भी शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश के भविष्य को शिक्षा ही बनाती है। भारत में आज़ादी से पश्चात् आधी शताब्दी गुजरने के बाद भी सभी नागरिक शिक्षित नहीं हो पाए हैं, विशेष तौर पर महिलाओ का प्रतिशत बहुत कम है।

किसी भी देश की प्रगति और उसकी पहचान उसके नागरिकों से की जाती है और उन नागरिकों की अच्छाईयां उनकी शिक्षा से प्राप्त की जाती है। इसी प्रकार शिक्षा सम्बन्धी सही जानकारी महिलाओं की शिक्षा से प्राप्त होती है हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महिलायें देश की आधी आबादी होती हैं और देश की सभी राष्ट्रीय कार्यो में उनकी हिस्सेदारी होती हैं इसलिए देश की प्रगति महिलाओं पर निर्भर होती है। यदि महिलायें शिक्षित हुयीं तो न केवल घरेलु वातावरण बल्कि सामाजिक जीवन की भी प्रगति होगी।

f'k{kk% ”शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक के मनुष्य और शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास है।“
—महात्मा गाँधी

- efgyk f'k{kk% महिला और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है, इसका एक रूप शिक्षा में महिलाओं को पुरुषों की तरह सम्मिलित करने से सम्बंधित है, दूसरे रूप में यह महिलाओं के लिए बनाई

गयी विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। पौराणिक काल में महिलाओं को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा दी जाती थी, परन्तु वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है की महिलाओं को भी उतना ही शिक्षित होना चाहिए जितना की पुरुष हों। यह सिद्ध सत्य है कि माता शिक्षित न होती तो देश की संतानो का कदापि कल्याण नहीं हो पाता। किसी भी देश को पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है।

- भारत को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से विकसित करने में शिक्षित महिला उस तरह का औज़ार है जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने कला–कौशल एवं ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है। देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए शिक्षित महिला का अमूल्य योगदान होता है। वर्तमान समय में भारत महिला साक्षरता के मामले में लगातार प्रगति कर रहा है। भारत के इतिहास में भी शिक्षित, संस्कारित एवं सामाजिक उत्थान के लिए महिलाओं का जिक्र किया गया है। मीराबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई एवं सावित्रीबाई फुले जैसी कुछ महिलाओं के साथ–साथ वेदों के समय की महिला दर्शनशास्त्री गार्गी, विस्वबरा, मैत्रयी आदि का भी उदाहरण है। ये सब महिलाएं प्रेरणा की स्रोत थी।

vè;;u dh vko';drk

lEcfèkr lkfgR;i=k पत्रिकाओं तथा पूर्व में हुए शोधों के गहन अध्ययन करने पर शोधार्थी ने पाया कि उच्च स्तर की शिक्षा महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण होती है। ऐसी महिलाएं जो उच्च शिक्षा से जुडी होती हैं बहुत सी समस्याएं, जैसे– आत्मनिर्भरता की समस्या, स्वतंत्रता की समस्या, नैतिक मूल्यों में बने रहने की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, आर्थिक समस्या, रूढ़िवादिता की समस्या एवं आत्मसम्मान की समस्या बहुत ज्यादा है तथा महिला उच्च शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी काफी तीव्र है। इनकी आकांक्षा जैसे– नौकरी पाना, नेतृत्व क्षमता विकसित करना, सामाजिक प्रतिष्ठा बनाना, सहनशीलता विकसित करना इत्यादि है। अतः उच्च स्तर पर महिलाओं की शैक्षिक समस्या एवं शैक्षिक आकांक्षा जानने हेतु अध्ययन की आवश्यकता है। भारत में उच्च शिक्षा में नामांकन बहुत कम है जिसमें महिलाओं के नामांकन स्थिति पुरुषों से कम है। प्राथमिक, माध्यमिक, की तरह ही उच्च शिक्षा में महिलाओं का नामांकन बढ़ाना आवश्यक है। इनका नामांकन बढ़ने के लिए इनकी समस्याओं की पहचान कर उसको दूर कर के बढ़ाया जा सकता है।

lEcfèkr lkfgR; dk vè;;u

- सिंह, वाई. के. एवं वर्मा, जे.एस. (2018) उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियों की जीवन शैली तथा उसके आयामों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
- शर्मा एवं अखिलेश (2017) ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन।
- गारा टी.के. (2016) स्टेटस आफ इंडियन वोमेन इन हायर एजुकेशन।
- देवी (2016) 'शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन एक विवेचना'।

ç;qä inksa dh lfØ;kRed ifjHkk"kk

mPp f'k{kk% उच्च शिक्षा से तात्पर्य स्नातक एवं परास्नातक एवं शोध पाठ्यक्रम चलाए जाने वाले विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय से है।

'kSf{kd leL;k% शैक्षिक समस्याओं से तात्पर्य शिक्षा प्राप्त करते समय जो समस्याएं आती हैं जिसके कारण शिक्षा प्राप्त करने में अवरोध उत्पन्न होता है, उसे शैक्षिक समस्या कहते हैं।

'kSf{kd vkdk{kk% शैक्षिक आकांक्षा से तात्पर्य शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त नौकरी–पेशा, सामाजिक उत्थान, मानवीय मूल्यों एवं अपनी महत्वकांक्षा की प्राप्ति करना है।

vè; ;u dk mí' ;

- महिला उच्च शिक्षार्थियों के शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
- महिला उच्च शिक्षार्थियों के शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- महिला उच्च शिक्षार्थियों के शैक्षिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

fu"d"k

महिला उच्च शिक्षार्थियों की शैक्षिक समस्या एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया। उच्च शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत महिला उच्च शिक्षार्थियों में अनेकों समस्याएं हैं जिनमें महिलाओं की आर्थिक समस्या, महिला उच्च शिक्षार्थियों में ऐसी स्थिति बहुत कम आती है, जब–जब आर्थिक कारणों से उनके शिक्षा में रुकावट उत्पन्न हो रही हो। विभिन्न सरकारी योजनाएं जो उच्च शिक्षा के लिए चलायी जाती है उन योजनाओं के सही तरीके से क्रियान्वयन से इनकी आर्थिक समस्याएं पूरी करने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

महिला उच्च शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत कारणों से भी शैक्षिक समस्या उत्पन्न होती है। महिलाओं को सामाजिक वातावरण से शिक्षा में सहायता तो ज़रूर मिलती है, लेकिन सामाजिक रूढ़ियां, बंदिशे, इत्यादि शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती हैं।

महिला उच्च शिक्षार्थियों में भाषा की भी समस्या आती है। अध्ययन में पाया गया कि महिलाएं अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने क्षेत्रीय भाषा में प्राप्त करने को ज्यादा प्राथमिकता देती हैं पर उच्च शिक्षा में आने के बाद कुछ महिलाओं के पास विकल्प की कमी हो जाती है जिससे उनके उच्च शिक्षा को भाषा काफी हद तक प्रभावित करती है।

महिला उच्च शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा काफी तीव्र है। महिला उच्च शिक्षार्थी उच्च शिक्षा के उपरांत पुरुषों के साथ कदम से कदम मिला कर चलना चाहती हैं। उच्च शिक्षा के उपरांत महिला उच्च शिक्षार्थी सामाजिक सहभागिता, अपनी जिम्मेदारी, सामाजिक सहभागिता, विचारो को प्रकट करना, भविष्य का निर्माण करना, आर्थिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नौकरी करना इत्यादि इनकी आकांक्षा है।

lUnHkZ lwph

1. सिंह याई. के. एवं वर्मा जे. यस. (2018) उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियों की जीवन शैली तथा उसके आयामों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन, *एन इंटरनेशनल जर्नल* अप्रैल (2018)– 169 vol- XVIII (2)
2. शर्मा ए. (2017). ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन, *रिसर्च लिंक*, एन इंटरनेश्नल जरनल, मार्च–156, vol- XVI (1) पेज–100
3. गारा टी. के. (2016) स्टेटस आफ इंडियन वोमेन इन हायर एजुकेशन, *जर्नल आफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस* ISSN 2222-1735 vol- 7(34), 2016, 56–64
4. देवी एम. (2016) शिक्षा और सामाजिक परिवर्तनः एक विवेचन, *रिसर्च लिंक,* एन इंटरनेश्नल जरनल, 151 vol- xv, Oct – 2016
5. गुल एवं खान (2015) दक्षिण कश्मीर में बालिका शिक्षा, इसके कारक एवं इसके चुनौतियों का एक अवधाराणात्मक अध्ययन, *एशियन जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसीप्लिनरी स्टडीज* Vol-III, जनवरी –2015 (116–110)
6. सिंह जी. एवं चौधरी एस. (2014). प्राचीन काल से मध्य काल तक महिला शिक्षाः एक विश्लेषण, *रिसर्च लिंक,* एन इंटरनेश्नल जरनल, जुलाई 124, vol-XIII
7. सिंह ए. के. (2014). मध्यकालीन हिन्दू नारियों की शिक्षा एवं उनकी स्थितिः एक विवेचन, *रिसर्च लिंक,* एन इंटरनेश्नल जरनल, अक्टूबर, 127, vol-XIII

––==00==––